प्रा.डा.श्रीमती शशिप्रभा जैन

एम.ए.(हिन्दी),एम.ए.(समाजशास्त्र)
पीएच.डी.,

महावीर महाविद्यालय,

कोल्हापुर।

प्रमाणपत्र ----

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि श्री साताप्पा शामराव सावंत ने मेरे निर्देशन में यह लघु शोध प्रबन्ध एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व योजनानुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। जो तथ्य इस प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये है, मेरी जानकारी के अनुसार सही है।

निर्देशिका
हिन्दी विभाग
महावीर महाविद्यालय,कोल्हापुर।

कोल्हापुर।
दिसम्बर २५, १९९२।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा.डा.शशिप्रभा जैन जी के निर्देशन में मैंने यह लघु शोध प्रबन्ध एम.फिल्. उपाधि के लिए लिखा है इस प्रबन्ध में प्रस्तुत की गई सभी बाते मेरी जानकारी के अनुसार सही है ।

श्री सातप्पा शामराव सावंत
(शोध छात्र)

कोल्हापूर ।

२९ दिसम्बर, १९९२ ।

:: भूमिका ::

सर्वप्रथम मैंने बी.ए.भाग-१ में डा.रांगेय राघव का 'प्रोफेसर' नामक लघु उपन्यास पढा जो हमारे पाठ्यक्रम में था। इसी लघु उपन्यास को पढकर मेरी हिन्दी कथा साहित्य के प्रति रुचि जागृत हुई और मैंने प्रेमचंद,भीष्म सहानी आदि के कुछ उपन्यास पढे। इसी समय शिवानी का 'कैंजा' लघु उपन्यास पढने का मौका मिला। मैं 'कैंजा' से बहुत प्रभावित हुआ और एक के बाद एक शिवानी के कई लघु उपन्यास को पढ डाला। एम.ए. करने के पश्चात जब एम.फिल.(हिन्दी) में प्रवेश लिया तब मैंने शोध प्रबन्ध शिवानी के लघु उपन्यासोंपर लिखना पसंद किया क्योंकि उनकी लेखन शैली कथानक,तथा पात्रों मे मैं पहले ही प्रभावित था। जब मैंने यह विचार अपनी मार्गदर्शिका श्रध्देय गुरुवर्या डा.श्रीमती शशिप्रभा जैन जी के सामने रख दिया तो उन्होंने स्वीकृति दी और समाजशास्त्र का छात्र होने के नाते मैंने अपने शोध प्रबन्ध का शीर्षक 'शिवानी के लघु उपन्यासोंमें प्रतिबिंबित समाज' रखा। मेरी मार्गदर्शिका एम.ए.(समाजशास्त्र) कर चुकी है, इसलिए उनका समाजशास्त्र सम्बन्धी मार्गदर्शन मेरे लिए काफी सराहनीय रहा है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टिसे मैंने इस लघु शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में बाँटा है।

प्रथम अध्याय लघु उपन्यासोंसे तात्पर्य है, जिसमें लघु उपन्यास के संबंध में विविध विद्वानों के मत,लघु उपन्यास का उद्भव,लघु उपन्यास के तत्व और हिन्दी लघु उपन्यासों के विकास पर संक्षिप्त रुप में प्रकाश डाला है।

द्वितीय अध्याय - शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है जिस में शिवानी का जीवन परिचय एवं कृतित्व का परिचय दिया है।

तीसरे अध्याय का शीर्षक शिवानी के लघु उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय है। इसमें मैंने शिवानी के १७ लघुउपन्यासों का संक्षिप्त परिचय दिया है। जिसे पढकर शिवानी के लघु उपन्यासों की कथावस्तु को समझा जा सकता है।

चौथे अध्याय में शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज पर चर्चा की है। इसमें समाज का अल्प परिचय दिया है। साथ ही समाज और व्यक्ति के संबंध तथा समाज के महत्वपूर्ण पहलूओंपर चर्चा की है, इसमें परिवार संस्था, विवाह संस्था, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के विविध आयाम,आर्थिक पक्ष,धार्मिक पक्ष, संस्कृतिक पक्ष, विभिन्न रोग व्याधि आदि को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया है।

पांचवे अध्याय में शिवानी के लघु उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को लिया है विशेष रुप से वैवाहिक समस्या,नारियों की समस्या, अनाथ बच्चों की समस्या,राजनीतिमें शीलभ्रष्ट व्यक्तियों की समस्या,हरिजन समस्या, युद्ध की समस्या आदि विविध सामाजिक समस्याओंका विस्तार से विश्लेषण किया है।

छठा अध्याय उपसंहार का है जो शोध प्रबन्ध का निचोड है। इसके बाद परिशिष्ट जोड दिया है।

ऋण - निर्देश

प्रस्तुत लघु शोध - प्रबन्ध को मैं पूरा कर पाया इसका श्रेय मेरे आदरणीय गुरुवर्य मार्गदर्शिका डा.सौ.शशिप्रभा जैन जी को है। उनके मार्गदर्शन के लिए मैं अत्यन्त ऋणी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा.व्ही.के.मोरे जी ने मुझे काफी सहायता की उसके लिए मैं उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। न्यू कॉलेज के प्रा.डी.यू.पवार जी ने मुझे समय-समय पर प्रोत्साहित किया इसलिए उनका आभार मानना मेरा कर्तव्य है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को पूरा करने से मेरे - माता-पिता एवं दादी माँ को जितना सन्तोष और हर्ष मिला है उसको मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता यह उनके आशीर्वाद का ही प्रसाद है।

शोध प्रबन्ध के मध्य महावीर महाविद्यालय की ग्रंथपाल श्रीमती म्हेत्रे जी, विलिंग्डन महाविद्यालय के ग्रंथपाल श्री वाय.एस.रास्तेजी एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रा.एस.एल.जोशी जी का सहकार्य अपेक्षित रुपसे मुझे मिला। उनको भुलाना मेरे लिए कठिन होगा।

शोध प्रबन्ध का टंकन कार्य श्री बाळकृष्ण रा.सावंत ने यथासमय पूरा किया है उनका भी मैं आभारी हूँ।

श्री साताप्पा शामराव सावंत।

कोल्हापुर।

दिनांक : २९ : १२ : ९२

अ नु क्र म णि का

पृष्ठ क्रमांक

- भूमिका 1 - 14

प्रथम अध्याय लघु उपन्यासों से तात्पर्य

उपन्यास-हिन्दी लघु उपन्यास-हिन्दी लघु उपन्यास

का उद्भव - हिन्दी लघु उपन्यास के तत्व

१) कथावस्तु

२) पात्र या चरित्र चित्रण

३) कथोपकथन

४) वातावरण

५) भाषाशैली १)वर्णनात्मक शैली

२)मनोविश्लेषणात्मक शैली

३)पत्र शैली

४)डायरी शैली

५)आत्मकथात्मक शैली

६) उद्देश्य

हिन्दी लघु उपन्यासोंका विकासक्रम

१) प्रेमचंदपूर्व लघु उपन्यास

२) प्रेमचंदयुगीन लघु उपन्यास

३) प्रेमचंदोत्तर लघु उपन्यास

४) साठोत्तरी लघु उपन्यास

द्वितीय अध्याय - शिवानी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व 15 - 23

तृतीय अध्याय - शिवानी के लघुउपन्यासों का संक्षिप्त परिचय 24 - 38

पृष्ठ क्रमांक

चतुर्थ अध्याय - शिवानी के लघु उपन्यासों में प्रतिबिंबित समाज 39 - 93

समाज से तात्पर्य - समाज की परिभाषा

समाज के विभिन्न अंग

१) सामाजिक समूह

२) समुदाय

३) संघ

४) संस्था

समाज की विशेषताएँ

१) निश्चित भूभाग

२) प्रजोत्पादन। यौन प्रजनन

३) सर्वांग व्यापक संस्कृति

४) अ-निर्मरता

शिवानी के लघु उपन्यासोंमें प्रतिबिंबित समाज

१) समाज और व्यक्ति

२) परिवार संस्था

३) विवाह संस्था

४) स्त्री-पुरुष संबंध

१) आत्मिक प्रेम संबंध

२) यौन संबंध

३) विषम दाम्पत्य संबंध

४) वेश्या संबंध

५) आर्थिक पक्ष --

१) शिवानी के लघु उपन्यासोंमें उच्चवर्ग

२) शिवानी के लघु उपन्यासोंमें मध्यवर्ग

३) शिवानी के लघु उपन्यासोंमें निम्नवर्ग

४) शिवानी के लघु उपन्यासोंमें अन्य-

-आर्थिक पक्ष

६) धार्मिक पक्ष

७) सांस्कृतिक पक्ष

८) विधि संस्कार - नामकरण-विवाह संस्कार-
दत्तक पुत्र विधि संस्कार-अन्त्येष्टिक्रियाविधि -
तर्पण-पिंडदान-पाथेय विधि संस्कार

९)शिवानी के लघु उपन्यासों में चित्रित विभिन्न
रोग-व्याधि

अ)शारीरिक रोग- रक्तचाप-एपेंडिक्स-कुष्ठरोग-
मधुमेह-दाय-दिल का दौरा - कैन्सर -
टायफाइड- मिरगी ।

ब) मानसिक रोग - पागलपन ।

पंचम अध्याय - शिवानी के लघु उपन्यासों में सामाजिक समस्या — 94 - 121

अ) वैवाहिक समस्या

१) प्रेम विवाह

२) दहेज प्रथा

३) अनमेल विवाह

४) बहुपत्नीत्व की समस्या

५) अन्तर्जातीय विवाह

६) कुलगोत्र

७) वर्ण विद्वेष

८) परित्यक्ता एवं परित्यक्त की समस्या

आ) नारियों की समस्याएँ

१) बलात्कारी नारी

२) गुनाहगार नारी

३) नौकरीपेशा नारियोंकी समस्या

४) उच्चशिक्षित नारियोंकी समस्या

५) सुंदरता एक समस्या

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

७) वेश्या समस्या
८) विधवा समस्या
९) अवैध मातृत्व की समस्या
१०) भ्रूण हत्या की समस्या
११) स्त्री का कुण्ठाग्रस्त जीवन

इ) विविध समस्याएँ
१) अनाथ बच्चों की समस्या
२) वृध्द समस्या
३) शराब पान की समस्या
४) अंध विश्वास की समस्या
५) राजनीति में शीलभ्रष्ट व्यक्तियोंकी समस्या
६) निर्धनता से उत्पन्न समस्या
७) रोगियों की समस्या
८) हरिजन समस्या
९) ऋण की समस्या
१०) आत्महत्या की समस्या
११) युद्ध की समस्या

छटा अध्याय - उपसंहार 122 — 131

अ) परिशिष्ट-१-आधार ग्रंथ सूची 132 — 134
आ) परिशिष्ट-२-सहायक ग्रंथों की सूची 135 — 137
इ) पत्रिकाएँ 138
ई) पत्र 139 — 141